रॉबर्ट मर्टन: संदर्भ समूह तथा अन्य अवधारणाएँ

(Robert Merton: Reference Group & Other Concepts)

डॉ. अनुराग कुमार पाण्डेय

सहायक प्रोफेसर

समाजशास्त्र विभाग

जे. एस. हिन्दू (पी. जी.) कॉलेज, अमरोहा

संदर्भ समूह से संबंधित अन्य सिद्धांत

- **हर्बर्ट हाइमन:** *The Psychology of Status, 1942*

  यह अवधारणा सर्वप्रथम हाइमन ने प्रस्तुत किया। वह मनोवैज्ञानिक आधार पर स्कूली बच्चों के अध्ययन के संदर्भ में इसका प्रयोग करते हैं। यह वह समूह है जिसे आधार बनाकर व्यक्ति अपना मूल्यांकन करता है तथा अपने आपको उस समूह की तरह बनाने का प्रयास करता है।

- **शेरिफ़ व शेरिफ़:**

  संदर्भ समूह एक मानसिक स्थिति है जिसमें किसी समूह के सदस्य दूसरे समूह के सदस्य (जिसे वे श्रेष्ठ समझते हैं) से अपना मानसिक संबंध जोड़ते हैं तथा स्वयं का मूल्यांकन करते हैं। इस प्रकार से शेरिफ़ व शेरिफ़ यहाँ दो बाते कहते हैं –

  – सदस्यता समूह के व्यक्ति का आत्म समूह से संबंध स्थापित करना।

  – अन्य समूह से संबंध स्थापित करने की आकांक्षा रखना।

- **जॉनसन:** वास्तविक तथा काल्पनिक संदर्भ समूह

- **टी. न्यूकॉम्ब:** नकारात्मक संदर्भ समूह

  यह वह समूह है जिसकी सदस्यता की इच्छा व्यक्ति नहीं रखता है।

संदर्भ समूह

- मर्टन की संदर्भ समूह की अवधारणा सापेक्षिक अभावबोध/ तुलनात्मक वंचना (Relative Deprivation) की अवधारणा से जुड़ी हुई है।
- सापेक्षिक अभावबोध की अवधारणा का प्रयोग सैमुएल स्ट्राउफर (*The American Soldier, 1949*) अमरीकी सिपाहियों के अध्ययन में करते हैं।
- शाब्दिक रूप से वंचना/ अभावबोध का तात्पर्य किसी वस्तु के न होने या ले लिए जाने या अभाव की स्थिति से है।
- सापेक्षिक वंचना एक ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति अपनी परिस्थितियों को दूसरे व्यक्तियों (संदर्भ समूह) की तुलना में हीन व कमजोर अनुभव करता है।

संदर्भ समूह

- *Social Theory and Social Structure*, 1957
- संदर्भ समूह वह समूह है जिसके आधार पर व्यक्ति अपनी उपलब्धियों, आकांक्षाओं, भूमिका व्यवहार आदि का मूल्यांकन करता है।
- संदर्भ समूह एक ऐसा समूह है जिसमें एक व्यक्ति अथवा किसी अन्य समूह की तुलना की जाती है। व्यक्ति स्वयं का तथा स्वयं के व्यवहार का मूल्यांकन करने के लिए संदर्भ समूह का उपयोग एक मानक के रूप में करता है।
- संदर्भ समूह ही व्यक्ति को बताता है कि उसका काम सही है अथवा गलत।
- मर्टन ने सामाजिक संरचना में व्यक्ति के भूमिका निर्वहन तथा सामाजिक गतिशीलता या सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या में संदर्भ समूह की अवधारणा का प्रयोग किया है।

समूह तथा समूह सदस्यता

मर्टन समूह तथा समूह सदस्यता की तीन विशेषताएँ बताते हैं –

- एक निष्पक्ष कसौटी: परस्पर संपर्क की आवृत्ति। अर्थात् समूह की समाजशास्त्रीय अवधारणा का संबंध उन अनेक लोगों से है, जो एक–दूसरे के साथ बार–बार सक्रिय संपर्क में आते हैं।
- सक्रिय संपर्क में आने वाले लोग स्वयं को सदस्य के रूप में परिभाषित करते हैं। अर्थात् वे यह अनुभव करते हैं कि सक्रिय संपर्क के स्वरूप के रूप में उनकी निश्चित अपेक्षाएँ हैं, जो उनके लिए तथा अन्य सदस्यों के लिए नैतिक रूप से अनिवार्य है।
- एक–दूसरे के सक्रिय संपर्क में रहने वाले लोगों को अन्य लोग 'समूह से संबंधित' बताते हैं। 'अन्य लोगों' में समूह के सदस्य तथा गैर–सदस्य दोनों शामिल हैं।

मर्टन गैर–सदस्यों को तीन श्रेणियों में विभाजित करते हैं –

- कुछ लोग समूह की सदस्यता की कामना कर सकते हैं।
- अन्य लोग इस प्रकार के संबंध के प्रति उदासीन हो सकते हैं।
- कुछ और ऐसे भी हो सकते हैं, जो समूह से असंबद्ध रहने को प्रेरित हों।

संदर्भ समूह के प्रकार

- जब मर्टन ने स्ट्राउफर की तथ्य सामग्री से संदर्भ समूह सिद्धांत को प्रस्तावित किया, तब वे कहते हैं कि ये समूह या तो आदर्शात्मक संदर्भ समूह हो सकते हैं या तुलनात्मक संदर्भ समूह।
- **आदर्शात्मक संदर्भ समूह:** वे समूह जो अपने सदस्यों के लिए मानक, मूल्य तथा व्यवहार के प्रतिमान निश्चित करते हैं।
- **तुलनात्मक संदर्भ समूह:** वे समूह जिनको व्यक्ति अपने या दूसरों के व्यवहार का तुलनात्मक आधार मानता है।

- आदर्शात्मक व तुलनात्मक संदर्भ समूहों की व्याख्या करते हुए मर्टन संदर्भ समूहों को दो भागों में बाँटते हैं –
- **सकारात्मक संदर्भ समूह:** वे समूह जिसे व्यक्ति पसंद करता है तथा अपने आचरण का निर्धारण करने एवं कामकाज व उपलब्धियों का मूल्यांकन करने के लिए उसे गंभीरता से अपनाता है।
- **नकारात्मक संदर्भ समूह:** वे समूह जिसे व्यक्ति नापसंद करता है तथा उसके अनुरूप आचरण करने के बजाय उसके विपरीत प्रतिमानों को अपनाता है।

संदर्भ समूह

वास्तव में संदर्भ समूह वे हैं जिनके साथ व्यक्ति अपनी तुलना करता है। इस तुलना का उद्देश्य स्वयं के अनुकूलन के लिए होता है। किसी भी स्थिति में संदर्भ समूह उन समूहों के बराबर नहीं होते जिनका व्यक्ति सदस्य होता है। यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि सदस्य, समूह की आलोचना सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही दृष्टियों से कर सकता है।

संदर्भ समूह के निर्धारक तत्व

मर्टन उन निर्धारक तत्वों की चर्चा करते हैं जिनसे प्रेरित होकर व्यक्ति के लिए आर्थिक, राजनीतिक व धार्मिक जीवन जैसे अलग–अलग उद्देश्यों के लिए अलग–अलग संदर्भ समूहों का चयन करना संभव हो जाता है।

संदर्भ समूह के चयन हेतु आवश्यक कारक

- संदर्भ व्यक्ति
- सदस्यता समूहों में से संदर्भ समूहों का चयन
- गैर–सदस्यता समूहों का चयन
- मूल्यों तथा प्रतिमानों को परिभाषित करने के लिए संदर्भ समूहों की भिन्नता
- निरंतर सक्रिय संपर्क वाले उपसमूहों अथवा प्रस्थिति श्रेणियों में से संदर्भ समूहों का चयन

अन्य अवधारणाएँ

- **प्रत्याशी समाजीकरण (Anticipatory Socialisation)**
  - यह एक तरह से स्वयं को उस समूह के लिए तैयार करना है, जिससे वह व्यक्ति जुड़ा हुआ तो नहीं हो, किन्तु उसका सदस्य बनना चाहता हो। यह किसी गैर–सदस्यता संदर्भ के मूल्यों व जीवनशैली को अपनाने के समान है।
  - मर्टन का कहना है कि प्रत्याशी समाजीकरण से व्यक्ति विशेष को दो तरह से लाभ हो सकता है। पहला, व्यक्ति को समूह में ऊँचा उठने में सहायता मिलती है। दूसरा, उस समूह का भाग बन जाने के पश्चात व्यक्ति द्वारा स्वयं को उसके स्वरूप में ढालना सरल हो जाता है।
  - व्यक्ति कई बार अपनी आने वाली भूमिकाओं का पहले से पूर्वाभास कर उसकी तैयारी करने लगता है। पूर्व से तैयारी की इस प्रक्रिया को ही प्रत्याशी/ पूर्वाभासी समाजीकरण कहते हैं।
- **सीमांत मानव (Marginal Man):** अवधारणा का सर्वप्रथम प्रयोग स्टेनोक्विष्ट, बाद में रॉबर्ट ई. पार्क
  - एम. शेरिफ़ ने भी इस अवधारणा का प्रयोग किया है।
  - मर्टन कहते हैं कि यदि व्यक्ति संदर्भ समूह का सदस्य बन जाता है तो उसमें सृजनशीलता तथा कार्य क्षमता बढ़ जाती है। परंतु यदि व्यक्ति संदर्भ समूह में शामिल नहीं हो पाता है, तो वह सीमांत मानव बन जाता है तथा उसकी सृजनशीलता घटती है।

अन्य अवधारणाएँ

मर्टन जब संरचना संबंधी सिद्धांत प्रस्तुत करते हैं, तब अनुरूपता व विचलन के साथ वे भूमिका तथा प्रस्थिति से संबंधित अन्य अवधारणाओं का भी प्रतिपादन करते हैं।

- **भूमिका संकुल/ पुंज (Role Set):** भूमिका पुंज से आशय भूमिका संबंधों के उस ताने बाने से है जिसमें एक व्यक्ति को एक विशिष्ट सामाजिक प्रस्थिति के तहत एक से अधिक भूमिकाओं का निर्वहन करना पड़ता है। अर्थात् एक विशेष प्रस्थिति से जुड़ी सभी भूमिकाओं को भूमिका संकुल कहा जाता है।
- **प्रस्थिति संकुल/ पुंज (Status Set):** किसी व्यक्ति की कभी मात्र एक ही प्रस्थिति नहीं हो सकती। एक व्यक्ति द्वारा धारण की गई विशिष्ट व विभिन्न प्रस्थितियों के संकुल को प्रस्थिति संकुल कहते हैं।
  - **प्रकट प्रस्थितियाँ (Manifest Status):** ये प्रस्थितियाँ किसी विशिष्ट सामाजिक स्थिति में व्यक्ति की एक अथवा उससे अधिक प्रस्थितियाँ ही वास्तव में सार्थक होती हैं तथा विद्यमान स्थिति को एक पहचान देती हैं।
  - **अप्रकट प्रस्थितियाँ (Latent Status):** प्रस्थिति संकुल में किसी निर्दिष्ट समय पर जो प्रस्थिति अथवा प्रस्थितियाँ सार्थक नहीं रहती हैं, अप्रकट प्रस्थितियाँ कहलाती हैं।

अन्य अवधारणाएँ

- **बहुल भूमिका (Multiple Role):** प्रस्थिति संकुल के गतिशील पक्ष को बहुल भूमिका कहते हैं। जैसे एक व्यक्ति की अनेक प्रस्थितियाँ (प्रस्थिति संकुल) होती हैं, ठीक उसी प्रकार उन प्रस्थितियों से संबंधित अनेक भूमिकाएँ भी होती हैं।
- **भूमिका संघर्ष (Role Conflict):** जब किसी व्यक्ति की भूमिकाएँ परस्पर विरोधाभासी अपेक्षाएँ करने लगती हैं, तो उसे भूमिका संघर्ष कहते हैं।
- **प्रस्थिति क्रम (Status Sequence):** एक व्यक्ति अपने जीवन काल में एक के बाद कई प्रस्थितियाँ धारण करता चला जाता है। यह सभी प्रस्थितियाँ एक निश्चित क्रम में प्राप्त की जाती हैं।

Next Class:

समाजशास्त्रीय सिद्धांत: प्रकार्यवाद I

(Sociological Theory: Functionalism) I